चमड़ा पकाने में देशी टेक्नॉलॉजी

वी. सुजाता

भारत में, और खासकर तमिलनाडु में चमड़ा उद्योग का लंबा इतिहास रहा है। टैनिंग यानी चमड़ा पकाने की प्रक्रिया में चमड़े को सड़ने से बचाने की व्यवस्था की जाती है; इसके लिए वनस्पति पदार्थों का भी उपयोग किया जाता है और रसायनों का भी। पारम्परिक रूप से स्थानीय पेड़ों की छाल और फलियों का उपयोग चमड़ा पकाने में किया जाता रहा है। वनस्पति पदार्थों की मदद से चमड़ा पकाना, रंग करना और फिनिशिंग करना तमिलनाडु में प्राचीन समय से प्रचलित रहे हैं। इसका ज़िक्र संगम साहित्य में मिलता है।

अट्ठारवीं सदी में यह एक कुटीर उद्योग था। इस काम को मूलतः चक्किलियार समुदाय करता था। चक्किलियार मद्रास प्रेसिडेंसी में एक तेलगु भाषी समुदाय था। ये लोग चमड़ा पकाने व चमड़े के सामान बनाने का काम करते थे। शहरों में चमड़े के जूतों, घोड़ों की जीन वगैरह जैसी चीज़ों की ज़रूरत होती थी। गांवों में भी चमड़े की कई चीज़ें प्रचलित थीं - मशक, पशुओं के लिए पट्टे वगैरह में चमड़े का उपयोग होता था। इस क्षेत्र में आवरम वृक्ष (कैसिया ऑरिकुलेटा) की छाल से चमड़ा पकाया जाता था।

चमड़ा उद्योग में ब्रिटिश लोगों के हस्तक्षेप के साथ ही इस उद्योग का शहरीकरण हो गया। इसके परिणामस्वरूप इस उद्योग में लगे समुदाय की सामाजिक गतिशीलता बढ़ी और वनस्पति पदार्थों से चमड़ा पकाने की तकनीक में सुधार आया। वाट और चेटर्टन जैसे ब्रिटिश अफसरों ने दक्षिण भारत में वनस्पतियों से पकाए गए चमड़े की बढ़िया क्वालिटी का ज़िक्र किया था। उन्नीसवीं सदी के अंत की जनगणना के आंकड़ों से पता चलता है कि कम से कम डेढ़ लाख कारीगर मात्र चमड़े की वस्तुएं बनाने के काम में लगे थे। चेटर्टन का अनुमान था कि उस समय मद्रास प्रेसिडेंसी में करीब 2 करोड़ रुपए मूल्य के चमड़े का उपयोग होता था।

चमड़ा उद्योग का कच्चा माल मूलतः मरे हुए जानवरों से प्राप्त होता था। भारत में दुनिया के किसी भी देश से ज़्यादा मवेशी थे। लिहाज़ा यहां चमड़ा उद्योग के लिए भरपूर कच्चा माल उपलब्ध था। इस बात ने ब्रिटिशों का ध्यान आकर्षित किया। जल्दी ही कच्चा चमड़ा और अधपका चमड़ा भारत से इंग्लैण्ड को होने वाले निर्यात का एक प्रमुख आइटम बन गया। यह बीसवीं सदी के शुरू की बात है। टैनिंग के लिए चमड़े की मात्रा व गुणवत्ता बढ़ाने के लिए म्युनसिपल बूचड़खाने स्थापित कर दिए गए।

कच्चा चमड़ा गांव से हटकर निर्यात के बाज़ार में पहुंच गया। आर.एन.एल. चन्द्रा के मुताबिक विदेशी प्रतिस्पर्धा का प्रभाव दोहरा होता है। एक ओर तो कच्चा माल महंगा हो जाता है तथा दूसरी ओर तैयार माल की कीमतें गिरने लगती हैं।

कच्चे माल के अभाव तथा विदेशी प्रतिस्पर्धा के चलते कमज़ोर हो रहे भारतीय चमड़ा उद्योग को सुदृढ़ करने के लिए अल्फ्रेड चेटर्टन ने सुझाव दिया कि यहां क्रोम टैनिंग शुरू की जाए। ब्रिटिश व्यापारिक लॉबी ने इस प्रस्ताव का जमकर विरोध किया क्योंकि इससे उनके आर्थिक हितों पर आंच आती। अलबत्ता लंबी बहस के बाद 1930 के आसपास भारत की कुछ टैनरियों ने क्रोम टैनिंग का काम शुरू किया। मगर 1952 तक देश की लगभग 43 प्रतिशत खालें ग्रामीण टैनरियों में ही पकाई जाती थीं। 1952 में राज्य प्रायोजित क्रोम टैनिंग शुरू हुआ।

आधुनिक चमड़ा उद्योग

आधुनिक चमड़ा उद्योग विभिन्न क्षेत्रों में गठित हैं -